मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 8

MTT–045

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2026

एम.टी.टी.-045 : हिंदी-सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिए गए हैं।*

---

1. विज्ञान-तकनीकी संबंधी सामग्री के अनुवाद की प्रविधि और आधारभूत अपेक्षाओं की विस्तार से चर्चा कीजिए। 20

अथवा

विज्ञापनों के अनुवाद का महत्व स्पष्ट कीजिए। विज्ञापनों का हिंदी से सिंधी अनुवाद करते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है ?

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखते हुए उनका हिंदी वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

गरज, निरामय, पहाड़ा, लकुटी, सप्ताह, श्रोता, गमन, फलक, तरोई, आधुनिक

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखते हुए उनका सिंधी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

छुगो, तख़्मीनो, डौंको, चिटणु, खेचल, डेंडो, तर्जीह, थांईको, नाठी, गिदिलो

4. नीचे दिए गए शब्दों में से किन्हीं **पाँच** का हिंदी और सिंधी में अर्थ बताते हुए हिंदी और सिंधी के वाक्यों में अलग-अलग प्रयोग कीजिए : 15

हिंदी शब्द	**सिंधी शब्द**
निवेदन	खेड़णु
बिनौला	छीहणु
रूपरेखा	डुकणु
त्रिभुजाकार	पसूं
सनकी	मर्कजु

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** अनुच्छेदों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 2×15=30

(क) आज भी अपने देश में यही मानकर चला जा रहा है कि या तो उद्योग या फिर परिवहन या हमारी बढ़ती सुविधाओं को पूरा करने वाले आवश्यक उपभोक्ता सामान प्रदूषण के बड़े कारण हैं। वास्तव में शहरों में प्रदूषण का एक बड़ा कारण हमारी सड़कों पर बढ़ती धूल और असुरक्षित विनिर्माण हैं जिनपर हमारा ध्यान नहीं जाता। एक आँकड़े के अनुसार देश में उद्योगों से मात्र सात प्रतिशत प्रदूषण होता है। परिवहन से भी यह 10 प्रतिशत से ज्यादा नहीं होता। इस मामले में सबसे बड़ा खतरा सड़कों पर पड़ी धूल से पैदा हो रहा है। इस संबंध में हम विकसित देशों से सीख सकते हैं। कई देशों में सड़कों पर दौड़ती गाड़ियाँ कभी भी धूल नहीं उठा पातीं, क्योंकि वहाँ सड़कों के दोनों तरफ घास की पट्टियाँ धूल को उड़ने नहीं देतीं। वहाँ की सड़कों को धूल मुक्त रखा जाता है। जबकि अपने देश की सड़कों पर ऐसी कोई व्यवस्था नहीं की गई, जो धूल को उठने न दे।

(ख) जेठमल परसराम एक सच्चे सूफी थे। उन्होंने सिंध के किसी भी अन्य लेखक की तुलना में शाह लतीफ एवं सचल सरमस्त की रचनाओं की व्याख्या और प्रकाशन में अपना सकारात्मक योगदान प्रदान किया। 1931 में शिकारपुर सिंध में आयोजित पहले सिंधी अदबी अधिवेशन में उन्हें सर्वसम्मति से अध्यक्ष मनोनीत किया गया। 1933–40 पर्यन्त हैदराबाद सिंध के नेशनल कॉलेज में वे सिंधी विषय के प्राध्यापक रहे।

जेठमल परसराम एक बहुमुखी प्रतिभासंपन्न लेखक थे। सिंधी समाचारपत्रों–पत्रिकाओं में उनके लेख, विचार प्रमुखता से प्रकाशित होते थे। सिंधी समाचारपत्रों में पत्रकारिता को साहित्य का दर्जा दिलवाने में उनकी अहम् भूमिका रही।

जेठमल परसराम आजीवन अनेक राजनेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं के संपर्क में रहे। उन्होंने अपना जीवन सांप्रदायिक सद्भाव के निमित्त समर्पित कर दिया।

1947 का विभाजन और सिंधी हिंदुओं का सिंध से पलायन उनकी अंतरात्मा तक को झंझोड़ गया। नतीजन घनघोर निराशा के परिणामस्वरूप उनकी तबीयत बिगड़ गई। श्री जेठमल को इलाज के लिए मुंबई लाया गया जहाँ उन्होंने 6 जुलाई, 1948 को अपनी अंतिम साँसें लीं।

(ग) सिंध में स्वदेशी शिक्षा पद्धति के प्रचार-प्रसार के लिए कराची में गुरुकुल और 1910 में हैदराबाद में ब्रह्मचर्य आश्रम, सक्खर में आचार्य कुल और शिकारपुर में ब्रह्मचर्य आश्रम स्थापित किया गया। हैदराबाद के ब्रह्मचर्य आश्रम में शिक्षा दी जाती थी। इस आश्रम की समिति के दो सचिव थे, एक महाराज कालीदास और दूसरे डॉ. चोइथराम गिदवाणी। उस समय डॉ. गिदवाणी हैदराबाद के मेडिकल स्कूल में चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। यह आश्रम सही अर्थों में देश-भक्ति के प्रचार-प्रसार का प्रमुख केंद्र बन गया था। यह आश्रम, देश पर बलिदान होने वाले क्रांतिकारी युवाओं का आश्रय स्थान भी था। आचार्य जे.बी. कृपलाणी और जंव्हरमल मनसुखाणी अर्थात्

स्वामी गोविंदानंद छुटिटयों के समय इस आश्रम में आते रहते थे। जब श्री काका कालेलकर, क्रांतिकारियों के साथ संबंध होने के कारण बड़ोदा से भूमिगत हो गए थे, तब आचार्य कृपलाणी ने उन्हें इस ब्रह्मचर्य आश्रम में आकर रहने का निमंत्रण दिया था। काका कालेलकर और आचार्य कृपलाणी के बीच मित्रता, फर्गुसन कॉलेज में पढ़ने के दौरान हुई थी। काकाजी, यहाँ स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुए, जहाँ उनका परिचय संस्कृताचार्य के रूप में कराया गया।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15

(क) अयूब पुल पार करण ते ब रस्ता ईंदा, हिकु सिधो थो वजे ऐं बियो मोड़ ते आहे। असां मोड़ वारो रोड वठी अयूब पुल जे हेठां थींदा साध बेले वटि पहुतासीं। शायदि कार में बिनि टिनि मिंटनि जो पंधु मस हो। बाहिरि काठियुनि जा ढेर लगल आहिनि। काठियुनि तोरण वारी वडी ताराज़ीअ जे भर में कुझु वण मौजूद आहिनि। कार खे परभरो छांव में बीहारे असां साधबेले

तरफ़ वेदंड़ वाट ते आयासीं। उन जे साम्हूं मसिजिद आहे। मसिजिद जे साम्हूं मथे हिक बिनि डाकनि ते चढ़ण खां पोइ हिक हमराह सुवालु कयो, "अव्हां हिंदू आहियो या मुसलमान ?"

हिंदुनि खे अंदरि वञण लाइ टिकेट वठी वञिणो थो पवे ऐं मुसलमाननि खे शायदि नालो वग़ैरह डई इजाज़त वठणी पवंदी आहे। उन डिहाड़े इस्लामाबाद खां फ़िल्म डिवीज़न वारा अचिणा हुआ, जिनि खे दाखिला पासूं डिनल हुयूं। टिकेट वठी असां किनारे ते बीठल बेड़ीअ में चढ़ियासीं। उते किनारे वटि केतिरियुनि बेड़ियुनि में अझा अडियल नजर आया। किनारे खां पाणीअ विच में साधबेले ताईं पहुचण में ख़ासि वक़्तु कोन लगो। शायदि पंज मिंट खनु लगा हूंदा। बेड़ीअ तां लही डाकणियूं चढ़िजनि थियूं ऐं साम्हूं शाही गेट आहे। खाबे हथ ते पाठ पूजा वारो कमरो, अंदरि मंडपु ऐं साजे तरफ़ वडो हालु। उन तरफ़ कुझु शेवाधारी मायूं भण्डारे लाइ मानी पचाए रहियूं हुयूं। बिए तरफ़ नंढिड़ा छोकिरा पाणीअ जे मटनि मां पाणी पियारे रहिया हुआ।

(ख) तूं चउ 'अल्लाह हेकिड़ो', वाई बी म सिखु,

सचो अखरु मन में, सो ई लिखियो लिखु।

मुठि भीड़ियाई भली, जे उपिटी त वाउ,

जे पधरि विधी गालिड़ी, त छडे वेई साउ।

पाणियारीअ सिर बहड़ो जर उसाति पखी जिअं,

असां सजणु तिअं, रहियो ई आहे रूह में।

मूर्ख मूर न ब झिणा, हेडांहूं होडांहूं कन,

कटरु जनि अखियुनि में, से किअं पिरीं पसनि।

कलाचीअ कुनाउ, मोटी कोन आइयो,

कनियिनि रछ विञाइया, कनियिनि तोबह ताउ।

× × × × ×